

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

देश दीपक*

रश्मि गोरे**

बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विशेष रूप से अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण एवं विस्तार सेवाओं के क्षेत्र में कार्य करती है। इस परिषद् द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं में अनुसंधान, समीक्षा एवं शिक्षा के विभिन्न मुद्दों को समाविष्ट किया जाता है। उनमें से एक पत्रिका प्राथमिक शिक्षक है, जो त्रैमासिक पत्रिका है। यह पत्रिका विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों, प्रशासकों, नीति निर्माताओं आदि को शिक्षा से संबंधित नए विचारों, समीक्षाओं, शैक्षिक समस्याओं और उनके समाधानों तथा अनुभवों और परिणामों को साझा करने एवं विस्तार देने के लिए मंच प्रदान करती है। इस शोध-पत्र में प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में वर्ष 2013 से 2022 तक प्रकाशित लेखों, शोध-पत्रों एवं समीक्षाओं का प्रवृत्ति (ट्रेंड) विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य लेखों एवं शोध-पत्रों के प्रकाशनों की संख्या, लेखों एवं शोध-पत्रों की विविधता, लेखक की सहभागिता, लेखों एवं शोध-पत्रों की पृष्ठ संख्या के अनुसार वितरण तथा लेखों एवं शोध-पत्रों में दिए गए संदर्भों की संख्या के वितरण का अध्ययन करना था। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि एक दशक के दौरान प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में 525 लेखों एवं शोध-पत्रों का प्रकाशन हुआ। 47.43 प्रतिशत लेखों एवं शोध-पत्रों में पृष्ठ संख्या 6 से 10 के मध्य पाई गई, जो सर्वाधिक रही, प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों द्वारा किए जा रहे नवाचारों एवं अच्छे प्रयासों को साझा करती है। इसके साथ ही, पाठकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत नवाचारी शिक्षण-अधिगम एवं आकलन प्रक्रियाओं पर नवाचारी अभ्यास तथा चिंतन-मनन करने के लिए मार्गदर्शित भी करती है।

शैक्षिक पत्रिका एक विद्वतापूर्ण प्रकाशन है, जिसमें विशेषज्ञों द्वारा लिखित लेख, शोध-पत्र और समीक्षाएँ प्रकाशित होती हैं। जिसका उद्देश्य शोध अध्ययनों से प्राप्त परिणामों, नवाचारों, ज्ञान आदि को प्रसारित करना, विशेषज्ञों के मध्य विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान प्रस्तुत करना है। पत्रिकाएँ मुख्यतः एक विशिष्ट क्षेत्र या विषय या अंतरविषयक होती हैं। ऐसी ही एक अंतरविषयक विद्यालयी शिक्षा पर केंद्रित पत्रिका प्राथमिक शिक्षक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.),

*शोधार्थी, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश 208024

**सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश 208024

नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों को शिक्षा नीतियों, मौलिक शैक्षिक विचारों, शिक्षण-अधिगम आकलन प्रक्रिया में हो रहे शोधों एवं नवाचारों, शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी जैसे विविध विषयों को प्रस्तुत करने एवं जानकारीयों को पहुँचाने का मंच प्रदान करना है। यह पत्रिका शिक्षा जगत से जुड़ी नीतियों विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं उससे संबंधित पहलों, विचारों एवं समीक्षाओं को प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत एवं मंच है।

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका हिंदी भाषा में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित की जाती है। यह पत्रिका विश्वविद्यालय अनुदान आयोग या यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (यू.जी.सी.) की केयर (कंसोर्टियम फ़ॉर एकेडमिक एंड रिसर्च एथिक्स (के.ए.आर.ई.)) पत्रिकाओं की सूची में सूचीबद्ध एवं समकक्ष विद्वानों द्वारा समीक्षा के उपरांत प्रकाशित होती है। यह पत्रिका प्राथमिक विद्यालयों में प्रयोग में लाई जाने वाली सार्थक एवं सहायक सामग्री को किस तरह रचनात्मक एवं मनोरंजन रूप में प्रयोग करना है, जिससे वह बच्चों को अधिगम के लिए अभिप्रेरित करे, को बढ़ावा देती है। यह पत्रिका वर्ष में अपने चार अंकों के साथ (जनवरी, अप्रैल, जुलाई एवं अक्टूबर) प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों द्वारा किए जा रहे नवाचारों एवं अच्छे प्रयासों को साझा करती है। इसके साथ ही, पाठकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत नवाचारी शिक्षण-अधिगम एवं आकलन प्रक्रियाओं पर नवाचारी अभ्यास तथा

चिंतन-मनन करने के लिए मार्गदर्शित भी करती है। अध्यापकों से जुड़े हुए नवीन शोधों, तकनीकियों तथा विकास से संबंधित लेखों का प्रसार करने वाली एक पत्रिका है।

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका की विशेषताएँ

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका शिक्षा की नींव को मज़बूत करने वाले शिक्षा के पहलुओं, मुद्दों एवं नवीन विचारों को स्थान देती है। यह पत्रिका सरल एवं समझने योग्य भाषा को महत्व देती है। पत्रिका रोचक, प्रेरक, प्रयोगात्मक एवं नवीन लेख एवं शोध-पत्रों का प्रकाशन करती है। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों से नई शिक्षण विधियों व तकनीकियों, विभिन्न शिक्षण-अधिगम गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है, जो प्रेरक कहानियों, उदाहरणों एवं खेल विधि के माध्यम से सिखाने की जानकारी प्रदान करते हैं। इस पत्रिका के लेखों एवं शोध-पत्रों में दैनिक जीवन से संबंधित जानकारीयों का समावेश किया जाता है, जिससे समझने में आसानी होती है। अतः इस पत्रिका में उपयुक्त एवं सटीक जानकारी मिलती है, जो शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य हितधारकों के लिए उपयोगी एवं लाभदायक है। पत्रिका में 'बालमन कुछ कहता है' एवं 'कविता' को विशेष स्थान दिया गया है।

यह पत्रिका प्रारंभिक विद्यालयी स्तर की शिक्षा पर केंद्रित है। यह पत्रिका विशेषज्ञों की गहन समीक्षा के पश्चात प्रकाशित होती है। इसमें संदर्भित एवं अद्यतन विषयों की व्यापक जानकारी होती है। यह पत्रिका विश्लेषणात्मक, निष्पक्ष एवं पारदर्शी है। जो पाठकों के लिए उपयोगी ज्ञान का प्रसार करती है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

प्रवृत्ति (ट्रेंड) विश्लेषण विकासात्मक अध्ययन की एक ऐसी विधि है, जिसके द्वारा पूर्व में घटित घटनाओं, आँकड़ों, प्रारूपों, गुणों एवं विशेषताओं का विश्लेषण करके वर्तमान में प्राप्त आँकड़ों के आधार पर भविष्य में होने वाली घटनाओं या आँकड़ों की भविष्यवाणी की जाती है। इसी प्रवृत्ति विश्लेषण के आधार पर पूर्व में संपादित अध्ययन इस प्रकार हैं— कविता, जोशीथ एवं अन्य (2024) ने उच्च शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता विषय पर 'बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण' किया। जिसमें 2000 से 2022 की अवधि के दौरान हुए प्रकाशनों की वृद्धि, देशों के योगदान, जर्नल्स के योगदान का विश्लेषण करते हुए पाया कि इस अवधि के दौरान प्रकाशनों में वृद्धि हुई है तथा उनमें चीन, यू.एस.ए., यूके एवं ऑस्ट्रेलिया देशों के उद्घरण सर्वाधिक थे। *एजुकेशन एंड इंफार्मेशंस टेक्नोलॉजीस्* एवं *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस् इन लर्निंग* जर्नल्स का योगदान सर्वाधिक पाया गया।

बुई, गुयेन एवं अन्य (2024) ने प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में साइंस टेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट (एस.टी.ई.एम.) पर वेब ऑफ़ साइंस डेटाबेस ग्रंथसूची विश्लेषण किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य वेब ऑफ़ साइंस डेटाबेस से वर्ष 1992 से 2022 के मध्य प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में एस.टी.ई.एम. के विकास का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में पाया गया कि इस अवधि के दौरान संबंधित शोध अध्ययन के प्रकाशनों में वृद्धि हुई है और कुल 308 शोध अध्ययन प्रकाशित हुए। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में एस.टी.ई.एम.

क्षेत्र से जुड़े अध्ययनों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि यू.एस.ए., ऑस्ट्रेलिया, स्पेन, तुर्की एवं ग्रीक के अध्ययन अधिक थे। एच-इंडेक्स, कुल उद्धरणों की संख्या एवं उद्धरणों के प्रकाशनों की संख्या के आधार पर पाया गया कि सर्वाधिक प्रचलित जर्नल *अल्टी चाइल्डहुड एजुकेशन जर्नल*, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ टेक्नोलॉजी एंड डिजाइन एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी नॉलेज एंड लर्निंग* थे।

सारी एवं अयपे (2024) ने शैक्षिक नीतियों के मुद्दों का 'बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण' किया। इस अध्ययन में वेब ऑफ़ साइंस डेटाबेस से वर्ष 2000 से 2023 के मध्य शैक्षिक नीतियों से जुड़े मुद्दों के संबंध में विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि कुल 931 लेख शैक्षिक नीतियों से जुड़े मुद्दों से संबंधित थे।

जैन एवं मीरा (2022) ने भारतीय आधुनिक शिक्षा पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों का 'बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण' किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य भारतीय आधुनिक शिक्षा पत्रिका के वर्ष 2014 से 2019 तक का 'बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण' करना था और परिणामतः पाया गया कि इस अवधि के दौरान भारतीय आधुनिक शिक्षा पत्रिका के 20 खंडों में कुल 218 लेख एवं शोध-पत्र 21 विषयों पर आधारित थे, जिनमें सर्वाधिक शिक्षण-अधिगम के लेख पाए गए। इसके अतिरिक्त शिक्षा-दर्शन, अध्यापक शिक्षा, भाषा शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, समावेशी शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं विषयों का समावेश पाया गया। लेखकत्व के रूप में एकल लेखक का सर्वाधिक योगदान पाया गया।

जैन (2021) ने *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन* पर 'बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण' किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य शोध-पत्र में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों की 2014 से 2019 तक की प्रगति का अध्ययन करना था। विश्लेषण में मुख्य रूप से पृष्ठों की संख्या, संदर्भ ग्रंथों की संख्या एवं लेखकों के योगदान पर विश्लेषण करना था। इस दौरान 5 भागों में, 20 अंकों के अंतर्गत 218 लेख एवं शोध-पत्र थे। विश्लेषण में पाया गया कि सबसे अधिक लेख एवं शोध-पत्र 2016-17 में (46) थे, जिसमें एकल लेखक का सहयोग सर्वाधिक था एवं कुल पृष्ठों की संख्या 2900 थी अर्थात् प्रत्येक लेख के लिए औसत 13.30 पृष्ठ थे एवं कुल संदर्भों की संख्या 4231 थी।

यिलमाज एवं बनयार्ड (2020) ने दूरस्थ शिक्षा विषय पर प्रवृत्ति विश्लेषण शोध किया। इसमें विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा में सहभागिता पर 1970 से 2016 तक 154 लेख पाए गए थे। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाओं में प्रकाशित दूरस्थ शिक्षा से संबंधित लेख एवं शोध-पत्र तथा उनके प्रकाशन वर्ष का वितरण, विभिन्न देशों का योगदान, लेखकों के योगदान की स्थिति, विषयों के आधार पर वितरण, शोध-क्षेत्र के आधार पर वितरण, शोध अध्ययन में न्यादर्श का आकार, शोध विधि के प्रयोग की स्थिति, समकों के संग्रहण हेतु उपकरण के प्रयोग का वितरण, चरों का वितरण एवं तकनीकी मीडिया के प्रयोग आदि से संबंधित प्रवृत्ति विश्लेषण का अध्ययन किया गया।

गोकट्स व अन्य (2012) के द्वारा *ट्रेंड्स इन एजुकेशनल रिसर्च इन तुर्की: ए कंटेंट एनालिसिस* किया गया। इसमें वर्ष 2005 से 2009 तक के 19 तुर्की शैक्षिक शोधों का चयन किया, जिसमें 5 एस.एस.सी.आई. (सोशल साइंस सिटेशन इंडेक्स) और 14 Ulusal Akademik Ag ve Bilgi Merkezi (ULAKBIM) से 2115 प्रकाशित शोध-पत्र शामिल थे। इस शोध-पत्र की विषयवस्तु विश्लेषण का उद्देश्य शोध-पत्रों की संख्या का वर्ष, शोध क्षेत्र, शोध विधि, शोध आँकड़ों के संग्रहण, आँकड़ों के विश्लेषण एवं न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि के आधार पर वितरण का विश्लेषण करना था। इन शोध-पत्रों के अंतर्गत अधिकतर शोध क्षेत्र इंस्ट्रक्शनल टेक्नोलॉजी, साइंस एजुकेशन, गाइडेंस एंड काउंसलिंग एवं मैथमेटिक्स एजुकेशन में प्रकाशित हुए हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किसी भी क्षेत्र में शोधकार्य करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में वर्णित है कि "किसी राष्ट्र के लिए एक जीवंत अर्थव्यवस्था को विकसित करने एवं बनाए रखने में अनुसंधान और ज्ञान सृजन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिससे समाज का उत्थान होता है और निरंतर राष्ट्र को और भी अधिक ऊँचाइयों तक ले जाने में इससे प्रेरणा मिलती है। किसी भी राष्ट्र के आर्थिक, बौद्धिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और प्रौद्योगिकीय विकास के लिए शोध का महत्व पहले से कई अधिक है" (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, 17.1)। इसलिए शिक्षा के हर पहलु को

ध्यान में रखकर शोध कार्य करना ज़रूरी है। किसी भी क्षेत्र में किए गए शोध कार्य को शिक्षाविदों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं अन्य जन समुदाय तक पहुँचाना आवश्यक है, इसके लिए उपयुक्त माध्यम जर्नल्स या शोध-पत्र-पत्रिकाएँ होती हैं। शोध-पत्रिकाओं में विविध विषयों, क्षेत्रों एवं चरों से संबंधित प्रकाशन होता है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के शोध-पत्र एवं पत्रिकाओं (पियर रिव्यूड, यूजीसी केयर, रा.शै.अ.प्र.प., स्कोपस, वेब ऑफ साइंस, पबमेड आदि) में बहुतायत संख्या में शोध आलेखों का प्रकाशन हो रहा है। समय-समय पर प्रकाशित शोध-पत्रों एवं आलेखों का मूल्यांकन करना आवश्यक है (बुई, 2024, कविथा, 2024, एवं जैन, 2022)। इससे ज्ञात होता है कि शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध-पत्रों एवं आलेखों की गुणवत्ता, उनकी प्रभावशीलता, गुण एवं विशेषताएँ क्या हैं? इससे शोध-पत्रिकाओं की गुणवत्ता में आवश्यक सुधार एवं नए अवसरों की पहचान का पता चलता है। भारतीय परिदृश्य में शोध-पत्रिकाओं से संबंधित प्रवृत्ति विश्लेषण से जुड़े शोध अध्ययनों का अभाव है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा जारी *प्राथमिक शिक्षक* पत्रिका पिछले कई वर्षों से शोध-पत्रों एवं आलेखों का प्रकाशन कर रही है। अतः इस पत्रिका का प्रवृत्ति विश्लेषणात्मक अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार इस शोध अध्ययन से प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों की प्रवृत्तियों को समझने में सहायक होगी।

शोध-अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में 2013 से 2022 तक की अवधि के दौरान हुए प्रकाशनों का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में लेखकों की सहभागिता का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों की पृष्ठ संख्या के अनुसार वितरण का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों में दिए गए संदर्भों की संख्या के वितरण का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेखों एवं शोध-पत्रों की भूमिका का अध्ययन करना।

प्रदत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका के 2013 से 2022 तक की अवधि में प्रकाशित पत्रिकाओं का प्रवृत्ति विश्लेषण किया गया। शोधार्थी द्वारा यह पत्रिका राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (<https://ncert.nic.in/journals-and-periodicals.php>) की वेबसाइट से डाउनलोड की गई थी।

उद्देश्य 1— प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में 2013 से 2022 तक की अवधि के दौरान हुए प्रकाशनों का अध्ययन करना।

इस उद्देश्य के लिए शोधार्थी द्वारा प्रवृत्ति विश्लेषण (आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर) किया गया है, जिसे तालिका 1 में दर्शाया गया है—

तालिका 1 — प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में लेखों एवं शोध-पत्रों की संख्या का 2013 से 2022 तक प्रकाशित अंकों का वर्षवार वितरण

वर्ष में प्रकाशित अंक	जनवरी	अप्रैल	जुलाई	अक्टूबर	कुल लेखों एवं शोध-पत्रों की संख्या
	(अंक 1)	(अंक 2)	(अंक 3)	(अंक 4)	
2022	12	14	15	17	58
2021	17	16	16	14	63
2020	14	14	17	17	62
2019	14	-	14	15	43
2018	16	15	13	14	58
2017	11	14	12	17	54
2016	-	11	12	11	34
2015	13	11	-	20	44
2014	15	11	16	12	54
2013	13	13	14	15	55
कुल लेख एवं शोध-पत्र	125	119	129	152	525

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2013 से 2022 तक की अवधि के दौरान 37 खंडों में कुल 525 लेखों एवं शोध-पत्रों का प्रकाशन हुआ। प्राथमिक रूप से वर्ष 2021 में सबसे अधिक 63 लेख एवं शोध-पत्र, इसी क्रम में वर्ष 2020 में 62 लेख एवं शोध-पत्र, वर्ष 2018 व 2022 प्रत्येक

में 58 लेख एवं शोध-पत्र, वर्ष 2013 में 55 लेख एवं शोध-पत्र, वर्ष 2014 व 2017 में 54 लेख एवं शोध-पत्र, वर्ष 2015 में 44, वर्ष 2019 में 43 लेख एवं शोध-पत्र और पत्रिका में वर्ष 2016 में सबसे कम 34 लेख एवं शोध-पत्र प्रकाशित हुए हैं।

उद्देश्य 2— प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में लेखकों की सहभागिता का अध्ययन करना

इस उद्देश्य के लिए शोधार्थी द्वारा प्रवृत्ति विश्लेषण (आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर) को तालिका 2 में प्रदर्शित किया गया है—

तालिका 2 — प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों का वर्षवार समेकित लेखकों की सहभागिता के आधार पर वर्ष 2013 से 2022 तक वितरण

वर्ष	एकल लेखक	संयुक्त लेखक	बहु लेखक	अन्य	कुल
2022	39	14	1	4	58
2021	46	12	1	4	63
2020	45	11	1	5	62
2019	32	8	0	3	43
2018	48	5	0	5	58
2017	46	5	0	3	54
2016	27	4	0	3	34
2015	40	4	0	0	44
2014	45	3	0	6	54
2013	48	3	0	4	55
कुल	416	69	3	37	525
%	79.24	13.14	0.57	7.05	100

तालिका 2 से स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में 525 लेख एवं शोध-पत्र में से 416 लेख एवं शोध-पत्र (79.24 प्रतिशत) एकल लेखक के हैं और वर्ष 2013 व 2018 में एकल लेखक के प्रकाशित लेख एवं शोध-पत्र की अधिकतम संख्या 48 एवं 2016 में न्यूनतम संख्या 27 है। इसी क्रम में 525 लेख एवं शोध-पत्र में से 69 लेख एवं शोध-पत्र (13.14 प्रतिशत) संयुक्त लेखक (दो लेखक) की सहभागिता के हैं और वर्ष 2022 में संयुक्त लेखक के प्रकाशित लेख एवं शोध-पत्र की अधिकतम संख्या 14 एवं न्यूनतम संख्या 2013 व 2014 में 3 है। बहु लेखकों के संदर्भ में दर्शाया गया है कि 525 लेख एवं शोध-पत्र में केवल 3 लेख एवं शोध-पत्र (0.57 प्रतिशत) हैं, जो वर्ष 2020, 2021 व 2022

में प्रकाशित हुए। इसके अतिरिक्त अन्य के रूप में 37 लेख एवं शोध-पत्र (7.05 प्रतिशत) प्रकाशित हुए, जिनमें भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, प्रारूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019, पठनीय संवाद, 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम', आलोक केंद्र में हैं शिक्षक जैसे लेख एवं शोध-पत्र सम्मिलित हैं।

उद्देश्य 3— प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों की पृष्ठ संख्या के अनुसार वितरण का अध्ययन करना।

इस उद्देश्य के लिए शोधार्थी द्वारा प्रवृत्ति विश्लेषण (आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर) को तालिका 3 में प्रदर्शित किया गया है—

तालिका 3 — प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में वर्षवार प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों की पृष्ठ संख्या के आधार पर वितरण (2013–2022)

वर्ष	1–5	6–10	11–15	16–20	21–25	26–30	>30	कुल लेखों एवं शोध-पत्रों की संख्या
2022	9	28	16	1	0	3	1	58
2021	9	38	10	3	1	2	0	63
2020	15	35	8	3	0	0	1	62
2019	12	29	2	0	0	0	0	43
2018	23	29	5	1	0	0	0	58
2017	22	23	7	1	0	0	1	54
2016	21	11	0	2	0	0	0	34
2015	26	15	2	1	0	0	0	44
2014	25	23	3	0	2	0	1	54
2013	31	18	5	1	0	0	0	55
योग	193	249	58	13	3	5	4	525
%	36.76	47.43	11.05	2.48	0.57	0.95	0.76	100

तालिका 3 में प्रत्येक खंड के सभी 525 लेखों एवं शोध-पत्रों की पृष्ठ संख्या के आधार पर वितरण वर्षवार दर्शाया गया है। पृष्ठों की संख्या के वितरण को सात आधारों पर विभाजित किया गया है। तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि 6 से 10 पृष्ठों के मध्य 249 लेख एवं शोध-पत्र (47.43 प्रतिशत) प्रकाशित किये गये हैं, जोकि सर्वाधिक संख्या हैं। वहीं 193 लेख एवं शोध-पत्र (36.76 प्रतिशत), जो 1 से 5 पृष्ठों के मध्य प्रकाशित हैं। इसी क्रम में 58 लेख एवं शोध-पत्र (11.05 प्रतिशत), जो 11 से 15 पृष्ठों के मध्य प्रकाशित हुए हैं, केवल 13 लेख एवं शोध-पत्र जो 16 से 20 पृष्ठों के मध्य प्रकाशित हुए हैं। 5 लेख एवं शोध-पत्र (0.95 प्रतिशत) ऐसे

प्राप्त हुए, जो 26 से 30 पृष्ठों के मध्य, 4 लेख एवं शोध-पत्र (0.76 प्रतिशत) ऐसे हैं, जिनमें पृष्ठों की संख्या 30 से अधिक पाई गयी एवं सबसे कम 3 लेख एवं शोध-पत्र (0.57 प्रतिशत) ऐसे प्राप्त हुए हैं जो 21 से 25 पृष्ठों की संख्या के मध्य प्रकाशित हुए।

उद्देश्य 4— प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों में दिए गए संदर्भों की संख्या के वितरण का अध्ययन करना।

इस उद्देश्य के लिए शोधार्थी द्वारा प्रवृत्ति विश्लेषण (आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर) को तालिका 4 में प्रदर्शित किया गया है—

तालिका 4 — प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में वर्षवार प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों में दिए गए संदर्भों की संख्या के आधार पर वितरण (2013–2022)

वर्ष	संदर्भों की संख्या का वितरण							कुल लेखों एवं शोध-पत्रों की संख्या
	शून्य	1–5	6–10	11–15	16–20	21–25	26–30	
2022	11	14	13	13	5	2	0	58
2021	13	19	15	11	2	3	0	63
2020	14	16	18	7	6	1	0	62
2019	14	11	13	3	1	1	0	43
2018	25	23	7	1	2	0	0	58
2017	23	17	10	2	1	0	1	54
2016	20	9	2	2	1	0	0	34
2015	29	8	4	2	1	0	0	44
2014	47	4	2	1	0	0	0	54
2013	47	6	2	0	0	0	0	55
योग	243	127	86	42	19	7	1	525
%	46.28	24.19	16.38	8.00	3.62	1.34	0.19	100

तालिका 4 में सभी खंडों के सभी 525 लेखों एवं शोध-पत्रों में दिए गए संदर्भों की संख्या के वितरण के आधार पर वर्षवार दर्शाया गया है। दिए गए संदर्भों की संख्या के वितरण को सात आधारों पर विभाजित किया गया है। तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक लेख एवं शोध-पत्र 243 (46.28 प्रतिशत) ऐसे पाए गये, जिनमें कोई भी संदर्भ उल्लिखित नहीं किया गया है। इसके साथ ही 127 लेख एवं शोध-पत्र (24.19 प्रतिशत) ऐसे प्राप्त हुए, जिनमें 1 से 5 संदर्भ लिखे गए हैं। 86 लेख एवं शोध-पत्र (16.38 प्रतिशत) ऐसे प्राप्त हुए, जिनमें 6 से 10 संदर्भ लिखे गये हैं। 42 लेखों एवं

शोध-पत्रों (8 प्रतिशत) में 11 से 15 संदर्भ, 19 लेखों एवं शोध-पत्रों (3.62 प्रतिशत) में 16 से 20 संदर्भ, 7 लेखों एवं शोध-पत्रों (1.34 प्रतिशत) में 21 से 25 संदर्भ एवं मात्र एक लेख एवं शोध-पत्र (0.19 प्रतिशत) ऐसा प्राप्त हुए जिनमें 26 से 30 संदर्भ उल्लिखित किए गए, जो सबसे कम वितरण है।

उद्देश्य 5— प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेखों एवं शोध-पत्रों की भूमिका का अध्ययन करना

इस उद्देश्य के लिए शोधार्थी द्वारा प्रवृत्ति विश्लेषण (आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर) को तालिका 5 में प्रदर्शित किया गया है—

तालिका 5 — प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में वर्षवार प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों की भूमिका के आधार पर विवरण (2013–2022)

शीर्षक	2022	2021	2020	2019	2018	2017	2016	2015	2014	2013	योग	%
लेख	46	50	50	33	44	43	25	30	30	28	379	72.19
बालमन कुछ कहता है	4	4	4	3	5	4	3	3	6	8	44	8.38
कविता	4	4	4	3	4	3	1	5	6	5	39	7.43
विशेष	4	4	4	3	5	3	3	0	1	1	28	5.34
शोध आलेख	0	0	0	0	0	0	0	3	5	2	10	1.90
अनुभव	0	0	0	1	0	0	0	0	2	5	8	1.52
पुस्तक के पन्नों से	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4	4	0.76
पठनीय	0	0	0	0	0	0	0	0	4	0	4	0.76
संस्मरण एवं अनुभव	0	0	0	0	0	0	0	3	0	0	3	0.57
बाल कहानी	0	0	0	0	0	1	2	0	0	0	3	0.57
पाठ्यपुस्तकें और लैंगिक संवेदनशीलता	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2	2	0.38
पुस्तक समीक्षा	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0.19
योग	58	63	62	43	58	54	34	44	54	55	525	100

प्राथमिक शिक्षा पत्रिका में प्रकाशित सभी 525 लेखों एवं शोध-पत्रों का 12 शीर्षकों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है, जिसे तालिका 5 में दर्शाया गया है। तालिका 5 से विदित होता है कि प्राथमिक रूप से सर्वाधिक 379 लेख (दो संभावनाएँ, पठन का बीहड़ यथार्थ, स्कूल का समाजशास्त्र, शिक्षार्थी सहभागिता, मित्र को पत्र, बच्चे स्कूल के बाहर क्यों?, गिनने की समझ, बचपन से बचपन तक, नन्हें-मुन्ने अनुभव, कार्ययोजना, कक्षा में क्यों सोते हैं बच्चे?, स्कूल से पहले, नई दुनिया के लिए 'तालीम', वाह! क्या दिन हैं?, चकई की चकदुम, खिलौने सीखने की नींव विकसित करने में मददगार, गणित मेला, डिजिटल शिक्षा, निपुण भारत मिशन, कुपोषण पर प्रहार एवं अन्य), इसी क्रम में 44 लेख बालमन कुछ कहता है पर, 39 कविताएँ एवं विशेष शीर्षक पर 28 लेख प्रकाशित हुए। उक्त विषयों के अलावा कुछ अन्य लेख एवं शोध-पत्र भी प्रकाशित हुए, परंतु उनकी संख्या मूलतः कम पाई गई, यथा—शोध आलेख (10), अनुभव (8), पुस्तक के पन्नों से (4), पठनीय (4), संस्मरण एवं अनुभव (3), बाल कहानी (3), पाठ्यपुस्तकें और लैंगिक संवेदनशीलता (2) एवं पुस्तक समीक्षा (1) प्रकाशित हुई थी।

निष्कर्ष एवं परिणाम

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं शोध-पत्रों के विश्लेषण के आधार पर प्राप्त हुए प्रमुख निष्कर्ष एवं परिणाम इस प्रकार हैं—

1. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका के अध्ययन की अवधि के दस वर्षों (2013–2022) के दौरान सभी अंकों को मिलाकर लेखों एवं शोध-पत्रों का वर्षवार वितरण किया गया और पाया गया कि कुल 37 अंकों में कुल 525 लेख एवं शोध-पत्र प्रकाशित

किए गए हैं, जिसमें वर्ष 2021 में सर्वाधिक एवं वर्ष 2016 में सबसे कम प्रकाशित हुए हैं।

2. पत्रिका में प्रकाशित कुल 525 लेखों एवं शोध-पत्रों में 416 लेख सर्वाधिक, शोध-पत्र एकल लेखक द्वारा, 69 लेख सबसे कम 3 लेख शोध-पत्र संयुक्त लेखक द्वारा, शोध-पत्र बहुलेखक द्वारा एवं 37 लेख एवं शोध-पत्र जिनमें रा.शै.अ.प्र.प., राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय आदि पर लेख लिखे गए हैं।
3. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में कुल 525 लेखों एवं शोध-पत्रों में सर्वाधिक 249 लेख एवं शोध-पत्र 6 से 10 पृष्ठ संख्या वाले पाए गए, सबसे कम 3 लेख एवं शोध-पत्र 21 से 25 पृष्ठ संख्या वाले एवं 4 लेख एवं शोध-पत्र ऐसे भी पाए गए, जिनमें 30 से अधिक पृष्ठ संख्या है।
4. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में कुल 525 लेखों एवं शोध-पत्रों में 243 लेख एवं शोध-पत्र सर्वाधिक बिना संदर्भों के प्रकाशित पाए गए हैं, जबकि संदर्भों के साथ 127 लेख एवं शोध-पत्र 1 से 5 संदर्भों के पाए गए एवं सबसे कम मात्र एक लेख एवं शोध-पत्र ऐसा पाया गया, जिसमें 26 से 30 संदर्भों की संख्या है।
5. प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में कुल 525 लेखों एवं शोध-पत्रों में सर्वाधिक लेख प्रकाशित हुए, जिनकी संख्या 379 है, इसके बाद 44 लेख एवं शोध-पत्र 'बालमन कुछ कहता है' के पाए गए एवं सबसे कम 'पुस्तक समीक्षा' पाई गई, जिसकी संख्या मात्र एक है। पत्रिका में दस वर्षों की अवधि में कुल 12 प्रकार के लेख एवं शोध-पत्र प्रकाशित हुए हैं।

अतः प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में लेखों एवं शोध-पत्रों, लेखकत्व, अंकों में प्रकाशित लेखों

एवं शोध-पत्रों की संख्या, लेखों एवं शोध-पत्रों की पृष्ठ संख्या एवं संदर्भों की संख्या में काफी अंतर पाया गया। प्राथमिक शिक्षक पत्रिका का विश्लेषण करने पर पाया गया कि पत्रिका में बालमन कुछ कहता है एवं कविता को प्रमुख स्थान दिया गया। इस हेतु शोधार्थी का व्यक्तिगत विचार है, कि इनके प्रकाशन हेतु रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अलग से एक पत्रिका प्रकाशित की जा सकती है, जिसमें अन्य

कविताओं को भी स्थान दिया जा सकता है। इस प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में इनकी जगह अन्य लेखों एवं शोध-पत्रों, समीक्षाओं को स्थान दिया जा सकता है, जिससे अन्य विद्वतजनों के विचारों को स्थान मिल सकेगा। अनियमित वितरण के फलस्वरूप भी प्राथमिक शिक्षक पत्रिका एक उच्च गुणवत्तायुक्त पत्रिका है, जो शिक्षाविदों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए अति उपयोगी है।

संदर्भ

- कविता, के. जोशीथ और अन्य. 2024. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस इन हायर एजुकेशन: ए बिब्लिओमैट्रिक एप्रोच. *यूरोपियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*. 13(3). पृष्ठ संख्या 1121–1137. <http://doi.org/10.12973/eu-jer.13.3.1121> 30 अगस्त 2024 को प्राप्त किया गया।
- गोक्तास, वाई एवं अन्य. 2012. ट्रेड्स इन एजुकेशनल रिसर्च इन तुर्की: ए कान्टेंट एनालिसिस. *एजुकेशनल साइंसेस. थ्योरी एंड प्रैक्टिस*. 12(1).
- https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ978453.pdf&ved=2ahUKEwj-s_7B8PX6AhXY8jgGHWQPDYgQFnoECBcQAQ&usg=A0vVaw2IYcQEWV_Jy7ox4yII81u 30 जुलाई, 2024 को प्राप्त किया गया
- जैन, पी. 2021. बिब्लिओमैट्रिक एनालिसिस ऑफ जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (2014–19) ए स्टडी. *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन*. XLVI (4). पृष्ठ संख्या 184–194. https://ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/journalofindianeducation/JIE_February_2021.pdf 20 अगस्त 2024 को प्राप्त किया गया।
- जैन, पी. और मीरा. 2022. भारतीय आधुनिक शिक्षा पत्रिका के वर्ष 2014 से 2019 तक प्रकाशित अंकों का बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 42(3). पृष्ठ संख्या 85–98. https://ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/bhartiyaadhunikshiksha/BAS_January_2022.pdf 22 जुलाई 2024 को प्राप्त किया गया।
- बुई, टी.एल. और अन्य. 2024. रिसर्च ऑन एस.टी.ई.एम. इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन फ्रॉम 1992 टू 2022: ए बिब्लिओमैट्रिक एनालिसिस फ्रॉम द वेब ऑफ साइंस डेटाबेस. *यूरोपियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*. 13(3). पृष्ठ संख्या 1057–1075. <http://doi.org/10.12973/eu-jer.13.3.1057> 3 अगस्त 2024 को प्राप्त किया गया।
- यिलमाज़, ए.बी. और पी. बनार्ड. 2019. इंगेजमेंट्स इन डिस्टेंस एजुकेशन सेटिंग्स: ए ट्रेड एनालिसिस. *तुर्कीस ऑनलाइन जर्नल ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन*. 21(1), पृष्ठ संख्या 101–120. <https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1239121.pdf> 25 अगस्त 2024 को प्राप्त किया गया।
- सारी, टी. और ए. अपेय. 2024. ए बिब्लिओमैट्रिक स्टडी ऑफ इश्यूस् इन एजुकेशनल पॉलिसी. *एजुकेशन साइंसेस*. 14 (568). पृष्ठ संख्या 1–24. <http://doi.org/10.3390/educsci14060568> 28 अगस्त 2024 को प्राप्त किया गया।
- <https://www.uvic.ca/library/help/tips/journal/index.php#secondary> 03 अगस्त, 2024 को प्राप्त किया गया।